सेलम ज्योति

अंक 13 - 2024-25

राजभाषा अनुभाग
सेलम मंडल, दक्षिण रेलवे

व्यक्तिगत नकद पुरस्कार 2021

हार्दिक बधाई

आधार वर्ष - 2021 के लिए श्री सी. मनोज कुमार, मुख्य कार्यालय अधीक्षक, वरिष्ठ मंडल सामग्री प्रबंधक/का./सेलम को हिंदी में अधिकाधिक काम करने के उपलक्ष्य में रेलवे बोर्ड के व्यक्तिगत नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

रेल मंत्रालय

(रेलवे बोर्ड)

प्रमाण–पत्र

श्री/सुश्री/श्रीमती सी. मनोज कुमार, मुख्य कार्यालय अधीक्षक, वरिष्ठ मंडल सामग्री प्रबंधक कार्या./सेलम, दक्षिण रेलवे को वर्ष–2021 में अपना अधिकांश कार्य हिंदी में करने पर रेल मंत्रालय की राजभाषा व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना के अंतर्गत प्रमाण–पत्र से सम्मानित किया जाता है। पुरस्कार स्वरूप 3000/- रुपए की राशि इनके बैंक खाते में RTGS/NEFT के माध्यम से अंतरित की जा चुकी है।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 09.10.2021

डॉ. बरुण कुमार
निदेशक, राजभाषा
रेलवे बोर्ड

सेलम ज्योति

अंक - 13 — 2024-25

संरक्षक
श्री पंकज कुमार सिन्हा
मंडल रेल प्रबंधक
दक्षिण रेलवे , सेलम मंडल

सह संरक्षक
श्री पी. शिवलिंगम
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक

संपादक
सुश्री बिनीता सोय
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
दक्षिण रेलवे, प्र.का., चेन्नै

संपादक मंडली
राजभाषा अनुभाग
दक्षिण रेलवे , सेलम मंडल

पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविता आदि में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इससे संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं।

दक्षिण रेलवे
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, सेलम मंडल
सेलम – 636005

संरक्षक की कलम से....

मेरे प्रिय साथियों,

साहित्य और समाज का गहरा और अभिन्न संबंध रहा है। साहित्य न केवल समाज की समस्याओं को उजागर करता है, बल्कि वह समाज को जागरूक करने, सुधारने और उसे नई दिशा देने का काम भी करता है। डिजिटल युग ने साहित्य के प्रसार के नए रास्ते खोले हैं। अब सोशल मीडिया, ब्लॉग्स, और ई-बुक्स के माध्यम से हिंदी साहित्य को एक नया मंच मिला है।

हर्ष की बात है कि राजभाषा अनुभाग द्वारा सेलम मंडल की हिंदी गृह पत्रिका “सेलम ज्योति” का विमोचन हो रहा है। “सेलम ज्योति” सेलम मंडल के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मध्य हिंदी के प्रति रुचि उत्पन्न करने एवं हिंदी पढ़ने व लिखने की कला को उजागर करने की एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसमें प्रकाशित साहित्य, लेख, कविताएँ और निबंध सरकारी कर्मचारियों को हिंदी साहित्य के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराते हैं। इससे कर्मचारियों की भाषा में न केवल कार्यकुशलता बढ़ती है, बल्कि हिंदी साहित्य और सांस्कृतिक धरोहर के प्रति भी उनकी समझ और सम्मान बढ़ता है। यह कार्यालयों में एक सकारात्मक और समृद्ध भाषा वातावरण का निर्माण करता है, जो कामकाजी वातावरण को अधिक प्रेरणादायक बनाता है।

राजभाषा अनुभाग को इस प्रयास के लिए साधुवाद देते हुए, लेखक एवं पाठक गणों से मैं आशा करता हूँ कि अपने इस उत्साह एवं रुचि को बनाए रखें और आगे भी सहयोग प्रदान करते रहें।

“सेलम ज्योति” की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

(पंकज कुमार सिन्हा)
मंडल रेल प्रबंधक
दक्षिण रेलवे, सेलम मंडल

दक्षिण रेलवे
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, सेलम मंडल
सेलम – 636005

सह संरक्षक की कलम से....

मेरे प्रिय साथियों,

अत्यंत हर्ष की बात है कि सेलम मंडल द्वारा हिंदी गृह पत्रिका “सेलम ज्योति” के 13 अंक का विमोचन हो रहा है। “सेलम ज्योति” पत्रिका के माध्यम से कर्मचारियों को अपनी साहित्यिक अभिव्यक्तियों को सामने लाने का एक मंच मिलता है। रेलवे के कर्मचारी विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत होते हैं और उनकी दिनचर्या, संघर्ष और अनुभव समाज के अन्य हिस्सों से अलग होते हैं। इस पत्रिका के जरिए वे अपनी कविता, कहानी, लेख, चित्रकला और अन्य कलात्मक रूपों के माध्यम से अपने विचार व्यक्त करते हैं।

हिंदी गृह पत्रिका “सेलम ज्योति” सेलम मंडल के कर्मचारियों के साहित्यिक और सांस्कृतिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण मंच साबित हो रही है। यह पत्रिका न केवल कर्मचारियों की व्यक्तिगत अभिव्यक्तियों को सम्मान देती है, बल्कि समाज और कार्यस्थल के विभिन्न मुद्दों पर भी प्रकाश डालती है। इसके माध्यम से रेलवे कर्मचारियों को अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिलता है। इस प्रकार, “सेलम ज्योति” का महत्व न केवल सेलम मंडल, दक्षिण रेलवे के कर्मचारियों के लिए, बल्कि समग्र समाज के लिए भी अत्यधिक है।

मुझे आशा है कि आप सभी इस पत्रिका का आनंद लेंगे और दिन-प्रतिदिन के सरकारी कामकाज में हिंदी का उपयोग करके राजभाषा के कार्यान्वयन में सहयोग करेंगे। "सेलम ज्योति" के सफल प्रकाशन के लिए सभी को मेरी शुभकामनाएं।

(पी. शिवलिंगम)
अपर मंडल रेल प्रबंधक
दक्षिण रेलवे, सेलम मंडल

दक्षिण रेलवे
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, सेलम मंडल
सेलम – 636005

संपादक की कलम से....

सेलम मंडल की हिंदी गृह पत्रिका "सेलम ज्योति" का विमोचन हमारे लिए एक गर्व का क्षण है। यह पत्रिका न केवल मंडल के कर्मचारियों के बीच हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देती है, बल्कि यह एक प्रभावी मंच भी प्रदान करती है, जहाँ वे अपनी रचनात्मकता, विचार और अभिव्यक्तियों को साझा करते हैं। इससे न केवल व्यक्तिगत सृजनात्मकता को बढ़ावा मिलता है, बल्कि यह सामूहिक चेतना और सहयोग की भावना को भी प्रोत्साहित करता है। हमारे कार्यस्थल पर हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार का यह एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

राजभाषा हिंदी का विकास इस बात पर निर्भर करता है कि सरकारी कामकाज में उसका कितना प्रयोग किया जाता है । सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए हिंदी कार्यशालाएं तथा विशेष अभियान चलाए गए जिनमें कर्मचारियों की अधिक संख्या में भागीदारी यह साबित करती है कि कार्मिकों के बीच में राजभाषा हिंदी के प्रति लोकप्रियता की वृद्धि हुई है । वैसे भी हम सभी का यह दायित्व बनता है कि हिंदी भाषा को एक सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित करने का निरंतर प्रयास करते रहें ।

पत्रिका के लिए विषय दान किए कर्मचारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ और आशा करती हूँ कि वे आगे भी इसी तरह राजभाषा के प्रचार—प्रसार में सहयोग प्रदान करते रहें। इस पत्रिका को और भी रोचक बनाने हेतु आपके सुझाव व आलोचनाएं आमंत्रित हैं।

(बिनीता सोय)
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
दक्षिण रेलवे, प्रधान कार्यालय, चेन्नै

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	श्री/श्रीमती	पृष्ठ सं.
1	नारी सशक्तिकरण - भारतीय समाज की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम	आर. उषा	8
2	चोर की दयालुता	आरती बाई मीना	11
3	नव भारत (कविता)	एस. प्रमोद	15
4	माँ-बाप	बलिराम प्रसाद	16
5	खो गया बचपन (कविता)	सुजीत कुमार सिंह	21
6	राष्ट्र निर्माण में युवाओं का महत्व	धर्मवीर मीना	22
7	पिता का प्यार (कविता)	आर. उषा	28
8	मोबाइल और सोशल मीडिया से मित्रता और संबंधों से दूरी	इमरान खान	29
9	जीवन का संतुलन	श्रीवासवी ज्ञानसुन्दर	32
10	सपनों की उड़ान (कविता)	संतोष कुमार	34
11	कुछ सीखने की भूख	वीरेंद्र कुमार	36
12	नारी शक्ति (कविता)	श्रीवासवी ज्ञानसुन्दर	41

संपर्क कार्यालय : राजभाषा अनुभाग, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, दक्षिण रेलवे,
सेलम मंडल, सेलम - 636005
रेलवे फोन - 65030/32, ई-मेल-ra@sa.railnet.gov.in

नारी सशक्तिकरण: भारतीय समाज की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम

आर. उषा,
मंरेप्र के निजी सचिव

भूमिका:- नारी सशक्तिकरण (Women Empowerment) का तात्पर्य महिलाओं को उनके अधिकार, स्वतंत्रता, शिक्षा, और समानता दिलाने से है। यह केवल एक सामाजिक सुधार नहीं बल्कि समाज की प्रगति का महत्वपूर्ण स्तंभ है। भारत में, महिलाओं ने ऐतिहासिक रूप से विभिन्न क्षेत्रों में योगदान दिया है, लेकिन लंबे समय तक उन्हें पुरुषों के अधीन माना गया। आज, आधुनिक भारत में नारी सशक्तिकरण की दिशा में कई प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, और निर्णय लेने की स्वतंत्रता मिल रही है।

भारत में नारी की स्थिति: अतीत से वर्तमान तक

भारत में प्राचीन काल में महिलाओं को समाज में उच्च स्थान प्राप्त था। ऋग्वेद और उपनिषदों में नारी को समान अधिकार दिए गए थे। गार्गी, मैत्रेयी, और अपाला जैसी विदुषी स्त्रियों का उल्लेख मिलता है। लेकिन मध्यकाल में सामाजिक कुरीतियों जैसे पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह, और अशिक्षा ने महिलाओं की स्थिति को कमजोर कर दिया।

ब्रिटिश काल में राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, और महात्मा गांधी जैसे समाज सुधारकों ने महिलाओं के उत्थान के लिए आंदोलन चलाए। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान में महिलाओं को समान अधिकार दिए गए, लेकिन फिर भी समाज में महिलाओं को समानता दिलाने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता बनी रही।

नारी सशक्तिकरण के प्रमुख पहलू

1. शिक्षा

शिक्षा महिलाओं को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाती है।

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" जैसी सरकारी योजनाएँ लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा दे रही हैं।

साक्षरता दर में सुधार हुआ है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी जागरूकता की कमी है।

2. आर्थिक सशक्तिकरण

महिलाओं को स्वरोजगार और स्टार्टअप्स के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

"मुद्रा योजना" और "स्टैंड-अप इंडिया" जैसी योजनाएँ महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान कर रही हैं। विभिन्न क्षेत्रों में महिलाएँ अग्रणी भूमिका निभा रही हैं, जैसे कि आईटी, बैंकिंग, स्वास्थ्य, और उद्यमिता।

3. सामाजिक और राजनीतिक भागीदारी

संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण की मांग बढ़ रही है। पंचायत स्तर पर 33% आरक्षण दिया गया है, जिससे ग्रामीण राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। महिलाएँ अब प्रशासनिक सेवाओं, न्यायपालिका और पुलिस बल में महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त की जा रही हैं।

4. कानूनी अधिकार और सुरक्षा

महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोकने के लिए कई सख्त कानून बनाए गए हैं, जैसे कि दहेज निषेध अधिनियम, घरेलू हिंसा अधिनियम, और कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न रोकथाम कानून। "निर्भया फंड" जैसी योजनाएँ महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बनाई गई हैं।

5. स्वास्थ्य और पोषण

मातृत्व स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार किया गया है।

"जननी सुरक्षा योजना" और "आयुष्मान भारत" जैसी योजनाएँ महिलाओं के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देती हैं।

कुपोषण और एनीमिया जैसी समस्याओं से निपटने के लिए पोषण अभियान चलाए जा रहे हैं।

नारी सशक्तिकरण के प्रमुख लाभ

आर्थिक विकास: जब महिलाएँ कार्यबल में समान रूप से भाग लेती हैं, तो देश की अर्थव्यवस्था तेज़ी से बढ़ती है।

परिवार और समाज की प्रगति: शिक्षित और आत्मनिर्भर महिलाएँ अपने परिवार और बच्चों को बेहतर भविष्य प्रदान कर सकती हैं।

लैंगिक समानता: समाज में महिलाओं और पुरुषों के बीच समानता को बढ़ावा मिलता है, जिससे एक स्वस्थ सामाजिक संरचना बनती है।

सशक्त निर्णय-निर्माण: जब महिलाएँ निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेती हैं, तो समाज में संतुलित और न्यायसंगत निर्णय लिए जाते हैं।

नारी सशक्तिकरण के समक्ष चुनौतियाँ

रूढ़िवादी सोच और पितृसत्ता: आज भी कई क्षेत्रों में महिलाओं को पुरुषों के अधीन माना जाता है।

शिक्षा और जागरूकता की कमी: ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों की शिक्षा को अभी भी महत्व नहीं दिया जाता।

महिलाओं के खिलाफ अपराध: दहेज, घरेलू हिंसा, बलात्कार, और यौन उत्पीड़न जैसी घटनाएँ महिलाओं की स्वतंत्रता में बाधा बनती हैं।

आर्थिक निर्भरता: कई महिलाएँ अभी भी आर्थिक रूप से पुरुषों पर निर्भर रहती हैं, जिससे वे अपने अधिकारों के लिए लड़ने में सक्षम नहीं होतीं।

नारी सशक्तिकरण के लिए प्रयास और समाधान

1. शिक्षा का व्यापक प्रसार: सभी लड़कियों को मुफ्त और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाए।

2. आर्थिक अवसरों का विस्तार: महिलाओं को स्वरोजगार और व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाया जाए।

3. कठोर कानून और उनका प्रभावी क्रियान्वयन: महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों के लिए सख्त सजा दी जाए।

4. महिला नेतृत्व को बढ़ावा: राजनीति, प्रशासन और कॉर्पोरेट क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई जाए।

5. सोशल मीडिया और जागरूकता अभियानों का उपयोग: महिलाओं के अधिकारों और उनके सशक्तिकरण के लिए डिजिटल माध्यमों का उपयोग किया जाए।

निष्कर्ष

नारी सशक्तिकरण केवल महिलाओं के लिए नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए आवश्यक है। जब महिलाएँ स्वतंत्र और आत्मनिर्भर होंगी, तो समाज में प्रगति और विकास की गति तेज़ होगी। भारत ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को नारी सशक्तिकरण में योगदान देना चाहिए ताकि भारत एक सशक्त, समानतापूर्ण और उन्नत राष्ट्र बन सके।

****

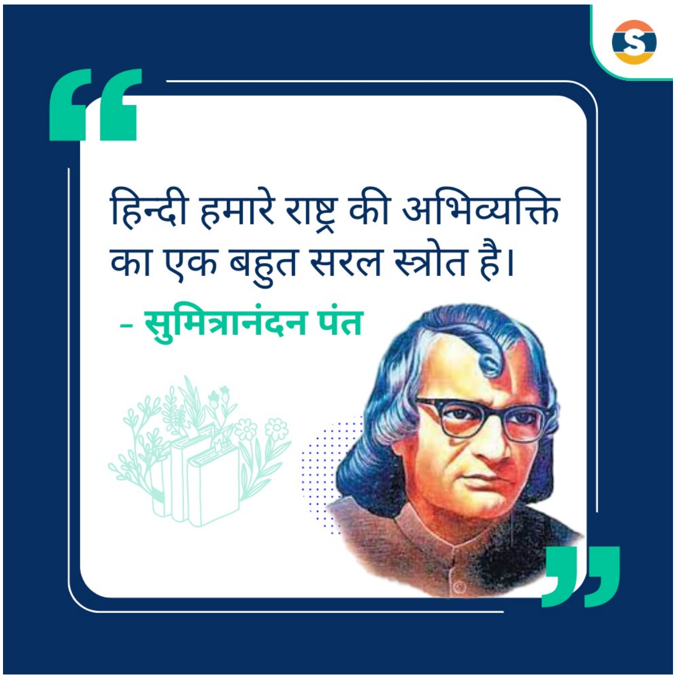

चोर की दयालुता

आरती बाई मीना
पत्नी-धर्मवीर मीना
मुख्य नियंत्रक/सेलम

एक नगर में एक सेठ और एक गरीब के घर पास-पास में थे। सेठ को कभी मलाल नहीं होता था कि एक गरीब उसका पड़ोसी है। गरीब की बेटी जिसका नाम रुक्मणि था, सयानी हो चुकी थी। एक रोज़ गरीब ने सेठ से कुछ धन उधार माँगा था ताकि सयानी हुई बेटी के हाथ पीले किये जा सकें। परन्तु सेठ ने उसे इन्कार कर दिया।

उसी रात सेठ के घर में एक चोर घुस आया । अभी तक सेठ और सेठानी सोये नहीं थे, तो चोर वहीं दुबक कर बैठ गया। सेठ सेठानी आपस में बातें कर रहे थे, "देखते ही देखते रुक्मणि विवाह योग्य हो गई है। सेठानी ने कहा "हाँ लड़कियां कुरडी (कूड़े का ढ़ेर) की तरह बढ़ती है, पता ही नहीं चलता कब सयानी हो जाती है।" सेठ ने कहा।

अब रुक्मणि के पिता को उसके हाथ पीले कर देने चाहिए, पता नहीं उसके माता-पिता क्यों नहीं ये बात सोच रहे ।" सेठानी ने कहाँ।

“वो सोच तो रहें हैं, पर उनके पास धन की कमी है। आज रुक्मणि के पिता ने मुझसे कुछ धन उधार मांगा था।" सेठ ने बताया ।

"तो क्या आपने उनको धन दिया?” सेठानी ने पूछा,

“नहीं मैंने उसे देने से इनकार कर दिया, ये सोचकर कि वो गरीब आदमी है लौटाएगा कैसे.. पर मुझे लगता है रुक्मणि के पिता को कुछ धन दे देना चाहिए। लड़की का कन्यादान ही समझ लेता। इससे कुछ पुण्य मिल जाता, पर मैं अब उसे धन नहीं दे सकता। जिसे मैं धन के लिए एक बार मना कर देता हूँ, उसे दुबारा धन नहीं देता।" कहते हुए सेठ ने आह भरी। कुछ देर बाद सेठ - सेठानी बातें करते करते सो गए।

चोर ने सेठ के घर से धन की पोटली चुरा ली और सेठ के घर से निकल आया। सेठ के घर से निकल कर उसे याद आया कि उसकी पत्नी ने कुछ बर्तन चुरा कर लाने को बोला था। वो तो वह भूल गया था, पर अब दुबारा सेठ के घर में घुसना उसे सुरक्षित नहीं लगा, तो उसने सोचा गरीब के घर से कुछ बर्तन चुरा ले जाता हूँ। यह सोचकर वह गरीब के घर में बर्तन चुराने के उद्देश्य से घुस गया।

गरीब के घर में भी सब जागे थे। जिसकी सयानी बेटी घर मे कंवारी बैठी रहे उन माता-पिता को नींद कैसे आये। चोर दुबक कर बैठ गया।

“........तो सेठ ने धन देने से इनकार कर ही दिया।" गरीब की पत्नी ने कहा।

अब उसे भी अपना सोचना होगा।" - गरीब ने यह कहते हुए ठंडी आह भरी।

"हाँ। इनकार कर दिया, पर वो अपनी जगह सही भी है। वो व्यापारी आदमी है। उसे धन का लेन देन करना होता है। हम उसे समय पर धन न लौटा पाये तो उसके व्यापार की पूँजी अटक जायेगी।

"परन्तु आप जानते हो न रुक्मणि की उम्र 16 वर्ष हो चुकी है। और उन सन्यासी बाबा ने कहा था कि अगर 17 वर्ष के होने तक इसका विवाह न किया तो रुक्मणि की मृत्यु हो जाएगी। रुक्मणि का 17 वर्ष की होने में केवल 4 माह शेष बचे है। नहीं तो हमारी इकलौती बेटी हमें बुढापे में बेसहारा बनाकर भगवान की प्यारी हो जाएगी।" गरीब की पत्नी ने सुबकते हुए कहा।

"हाय रे मेरी किस्मत ! मुझे गरीब के घर पैदा किया और साथ में रुक्मणि को मिला अभिशाप..... मैं क्या करूँ..... कहाँ से धन लाऊँ... उसका कन्यादान करने के लिए .... इससे बेहतर ईश्वर रुक्मणि की जगह मेरे प्राण ले ले।" गरीब ने आह भरी।

चोर सब सुन रहा था। चोर ने सोचा मैं तो अपनी मस्ती के लिए चोरी करता हूँ। असली धन की आवश्यकता तो इस गरीब को है वरना इनकी बेटी मृत्यु को प्राप्त हो जाएगी। वो सन्तान को खोने के दर्द को समझता था। दो वर्ष पूर्व उसके छोटे पुत्र की सर्पदंश से मृत्यु हो चुकी थी। मुझसे अच्छा तो वो सेठ ही है, जिसने कम से कम इसे धन देने का सोचा तो सही।

उसने रसोई में से कुछ बर्तन चुरा कर अपनी साथ लाई झोली में डाल लिए। चूल्हे से एक कोयला निकाला और आँगन में ये लिख दिया, "सेठ की तरफ से रुक्मणि के विवाह के लिए दिया गया धन....... एक चोर ।" उसके पास धन की पोटली रखकर और चुराए हुए बर्तन लेकर वहाँ से रफूचक्कर हो गया, क्योंकि उसे भी पत्नी से उलाहना नहीं लेना था।

सुबह दोनों घरों में हड़कंप था। सेठ के यहाँ धन चोरी से और गरीब के यहाँ धन मिलने से, और बर्तन चोरी होने से । एक बार तो गरीब ने सोचा क्यों न धन छुपा लूँ। रुक्मणि का विवाह कर दूँगा - फिर उसने सोचा कि लोग पूछेगे तो क्या कहूंगा ? धन कहाँ से आया... और लोग शक करेंगे सेठ के घर मैंने चोरी की है। मुझसे अच्छा तो वो चोर ही अच्छा निकला, जो मेरी व्यथा सुनकर चुराया हुआ धन रुक्मणि के विवाह के लिए छोड़कर चला गया। जब एक चोर इतनी दयालुता दिखा सकता है तो मैं क्या ईमानदारी नही निभा सकता ?

गरीब सेठ के धन की पोटली उसके घर ले गया और सारा किस्सा कह सुनाया । सेठ को अपने घर लाकर चोर की लिखी हुई बात भी पढ़वाई ।

सेठ ने सोचा 'एक चोर इतना अच्छा हो सकता है, चुराया हुआ धन इस गरीब की बेटी के

उसने गरीब को उस पोटली में से आधा धन दे दिया और कहा "ले लो, ये धन रुक्मणि के विवाह के लिए है और इसे लौटाने की भी जरूरत नहीं है।"

यह सुनकर गरीब बोला, " सेठ जी आप बहुत अच्छे हैं।"

“अच्छा तो न मैं हूँ, न तुम हो। अच्छा तो वो चोर था जिसने रुक्मणि के विवाह की व्यवस्था कर दी। मेरे पास धन होते भी मैं तुम्हें दे नहीं सका - और वो चुराया हुआ धन भी दे गया, ये कहते हुए सेठजी ने गरीब को गले से लगा लिया।

निष्कर्ष - परोपकार मनुष्य की सबसे बड़ी पूँजी होता है।

****

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई है जो इस प्रकार है :-

(1)	असमी	(12)	तेलगू
(2)	बंगाली	(13)	संस्कृत
(3)	गुजराती	(14)	उर्दू
(4)	हिन्दी	(15)	सिंधी
(5)	कन्नड़	(16)	कोंकणी
(6)	कश्मीरी	(17)	मणिपुरी
(7)	मलयालम	(18)	नेपाली
(8)	मराठी	(19)	डोंगरी
(9)	ओडिया	(20)	मैथली
(10)	पंजाबी	(21)	बोडो
(11)	तमिल	(22)	संथाली

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है.

– मैथिलीशरण गुप्त

नवभारत

एस. प्रमोद
तकनीशियन ग्रेड ।।।/कैववै/मेट्टुपालैयम

नवभारत के निर्माण के लिए,
वैज्ञानिक चेतना का विस्तार हो,
सोच में हो बदलाव गहरा,
नए विचारों की लहर हो।

भारत को नवीनीकरण चाहिए,
दुनिया में इसकी पहचान हो,
जो सोचें वैज्ञानिक रूप में,
वही देश का नेतृत्व हो।
जातिवाद की सोच को बदलें,
हर दिल में समता की बुनियाद हो,
एक साथ मिलकर सब गायें,
सार्वभौमिक भजन का संगीतमय राग हो।

अंधकार से लड़ें हम सभी,
बुराई से हम संघर्ष करें,
मूल्यों की जागरूकता फैलाएँ,
भारत के दिल में यह चिंगारी जलाएँ।
पेट से भरे इस देश को,
ज्ञान से सजा हो यह देश,
करुणा से परिपूर्ण हो,
भारत में हो हर सुख की सृष्टि।
आइए हम सब मिलकर यह संकल्प लें,
नवभारत को एक नया रूप दें,
ज्ञान, करुणा और समता से,
हर दिल में प्रेम का सूरज चमकाएँ।
नवभारत के इस नए दौर में,

हम सभी का योगदान हो।
सपनों को सच करने के लिए,
हम सबका सामूहिक प्रयास हो।
****

माँ – बाप

बलिराम प्रसाद
स्टेशन अधीक्षक, पालैयम

पिता के ऊपर किसी ने बहुत अच्छा लिखा है-

"पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान है,
पिता नन्हे से परिन्दे का बड़ा आसमान है।
पिता है तो घर में प्रतिपल राग है।
पिता से माँ की चूडी, बिंदी और सुहाग है।
पिता है तो बच्चों के सारे सपने है,
पिता है तो बाजार के सब खिलौने अपने है।"

आज हम एक ऐसे इंसान की व्याख्या करने जा रहे हैं जो जीवन में शायद सबसे अधिक कुर्बानी देता है लेकिन जीवन में उसे सबसे कम क्रेडिट नसीब होता है, रिश्ते में जिसका नाम है - पिता।

आखिर कौन है वो पिता, पिता वो है जो नौकरी पर जाता तो जवान है, पर लौटता है बूढा होकर । एक बाप अपनी पूरी जिन्दगी अपने बच्चों के सपने पूरे करने और घर को ठीक से चलाने में निकाल देता है। उसके जेब में पैसे हो या ना हो पर दिल में हौसला जरूर रहता है। खुद के लिए 500/- की जूता भी नहीं खरीदेगा, पर औलाद की खुशी के लिए 5000/- का जूता भी उसके पैरों में पहना देगा। माँ नौ महीने बच्चों को कोख में रखकर सींचती है और पिता सारी उम्र उसकी परवरिश खुशी-खुशी करता है। आज देश भर के नौजवानों को अपनी इस लेख के माध्यम से बता देना चाहता हूँ जिनकी औलादें नहीं होती है ना वो जाने कितने व्रत, भजन और क्या-क्या जतन करते हैं। न जाने कौन - कौन से चौखट पर अपना माथा रगडते हैं। दर-दर की ठोकरे खाते है और जिस पल उसकी गोद में कोई नन्हा फरिश्ता आता है तो वो माँ बाप उसी पल से उसकी सारी जिन्दगी की चिंताओं को अपने सर पे ले लेते हैं। शादी -विवाह, पढाई-लिखाई सबकी फिक्र उसी पल से होने लगती है। माँ चाप थोड़ा-थोड़ा पैसा बचाके अपनी बेटियों के लिए एक - एक गहना बनवाना शुरु कर देते हैं ताकि उसकी शादी में काम आ सके। एक बाप अपने जीवन की जमा पूंजी और तमाम पैसा एक झटके में हँसते-हँसते अपने बच्चों को दे देता है।

माँ बाप अपने बच्चों के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार रहते हैं। मैं खुद दो बच्चों का पिता हूँ और यकीन मानिये अगर कोई गारंटी दे कि किसी पहाड़ पर चढ़ने से मेरे बच्चों का भविष्य सुरक्षित होगा तो मैं बिना देर किए नंगे पाँव पहाड़ पर चढ़ना शुरु कर दूंगा। मैं ही नहीं, मेरी तरह दुनिया के हर माँ बाप अपने बच्चों के लिए ऐसा ही करेंगें।

माँ-बाप चाहे कितने ही सफल हो, दुनिया में किसी भी लेवल पर हो, पर जब बात अपने बच्चों की आती है तो जो सिर्फ एक साधारण माता-पिता होकर रह जाते है। शाहरुख खान, भारतीय फिल्म एक्टर कितने ही बड़े बादशाह है। दुनिया उनकी सिर्फ एक झलक पाने को बेताब रहती है। उनकी फिल्मों की बॉक्स ऑफिस का कलेक्शन करोड़ों रुपयों में होता है। वो जिस सड़क से गुजर जाए, सड़कें जाम हो जाती है। उनकी सिर्फ एक झलक पाने के लिए उनके घर "मन्नत" के आगे लोगों का सैलाब लगा रहता है। ऐसा स्टारडम किसी बिरले को ही नसीब होता है।

पर जब नारकोटिक्स डिपार्टमेंट उनके बेटे आर्यन खान को ड्रग्स केस मामले में गिरफ्तार करता है तो वहीं सुपर स्टार शाहरुख खान तमाम रिसोर्सेज होते हुए भी समीर वानखेडे के सामने हाथ जोड़े नजर आते हैं। उनकी फोन की चैट लीक हुई, जिसमें वो बड़े भावुक होकर समीर वानखडे से निवेदन कर रहे है कि आप मेरे बेटे को छोड़ दें। दुनिया का सबसे बड़ा सुपर स्टार जिसे दुनिया झुका न सकी, औलाद के दो आँसुओं ने इसे तोड़ दिया।

- पिता होना इतना मुश्किल है।

राजा दशरथ पराक्रमी राजा थे। उनके पराक्रम का डंका तीनों लोक में बजता था। जब देव और दानवों में युद्ध हुआ तो खुद भगवान इन्द्र - राजा दशरथ से मदद माँगने आए। दानवों की सेना जिस राजा दशरथ से काँपते थे, उन्हीं राजा दशरथ ने अपने पुत्र राम के बिछड़ते ही अपने प्राण त्याग दिए। इतने पराक्रमी राजा भी पुत्र मोह से ऊपर ना उठ सके।

- पिता होना इतना मुश्किल है।

राजा दशरथ हो या शाहरुख खान, और न जाने कितने ही लोग, पूरी - दुनिया के सामने कुछ और होते हैं, पर जब बात अपनी औलाद की आती है तो सबकी पर्सनालिटी की एक एंगल देखने में मिलती है। माँ बाप होना इतना मुश्किल है। सिर्फ पिता ही नहीं माँ के कर्ज को मरकर भी नहीं उतारा जा सकता है। बच्चे का मल-मूत्र माँ बाप के अलावा कौन साफ कर सकता है? ऐसा काम वे खुशी-खुशी करते हैं। इसलिए शायद भगवान ने माँ बाप की पूजा खुद से भी पहले बताई है। बच्चा बीमार होता है तो नींद माँ को नहीं आती । माँ बड़ी अद्‌भुत होती है।। जो बच्चे के रोने के अंदाज़ से समझ जाती है कि भूखा है या पेट में दर्द हो रहा है, क्योंकि बोल के तो बच्चा समझा नहीं सकता है। प्रसव-पीड़ा दुनिया के सबसे बड़े दर्द में एक है। जिसे हर माँ खुशी-खुशी सहन करती है। ताकि एक नवीन जीवन धरा पर आ सके। कहते हैं कि बीस हड्डियों के एक साथ टूटने के बराबर जितना दर्द होता है, उतना ही दर्द एक माँ को होता है, एक जीवन को जन्म देते हुए। याद रखना - इस दुनिया में एक रिश्ता बिना स्वार्थ का होता है, वो होता है माँ बाप को अपने बच्चों का साथ। उनको अपने बच्चों में सिर्फ इतना ही आशा होती है कि उनके बच्चे कामयाब बने, नेक बने। इसके अलावा उनकी कोई अपना स्वार्थ कभी नहीं होता है।

आज मैं बात करता हूँ आज की नई पीढ़ी और उनसे अपने माँ बाप के रिश्तों के बारे में। सबसे पहले - मैं ये स्वीकार करना चाहता हूँ कि आज की पीढ़ी हर प्रकार से पिछली सभी पीढ़ियों से बेहतर है। जितनी सुविधा आज की पीढ़ी को मिला है, उतना कभी किसी पीढ़ी को नसीब ही नहीं हुआ। जितनी प्रतिभा आजकल के बच्चों और युवाओं में देखने को मिलता है इतनी प्रतिभा पहले कभी नहीं था आज के दौर में 98%-100% अंक कई विद्यार्थी आसान से लाते है और किसी को कोई हैरानी भी नहीं होती है। हमारे दौर में सब विषयों को मिलाकर भी कई बच्चों के 100 अंक पूरे नहीं होते थे । ये बात तो बिल्कुल तय है कि आज की पीढ़ी में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। लेकिन कहानी में ट्विस्ट कब आता है जब बच्चे 14 से 20 साल के उम्र के होते हैं और उनके उम्र के होर्मोन्स उछाल मारने लगते हैं। यही समय होता है जब ये होर्मोन्स बच्चों को अपने माँ बाप से दूर कर देते हैं। क्योंकि इस उम्र में बच्चों को चाहिए आजादी और माँ बाप वो आजादी देते नहीं, क्योंकि वो जानते हैं कि इस तरह की आजादी के लिए ये उम्र सही नहीं है। इसलिए माँ बाप उसे रोकते हैं, समझाते हैं, उनको पता है कि ये उम्र फिसलने वाली है। ये ही उम्र में भविष्य बन भी सकता है बिगड़ भी सकता है। अब बच्चों को ये लगने लगता है कि ये दोनों लोग मेरे दुश्मन है। बच्चे अपने माँ बाप से झूठ बोलना शुरू कर देते हैं, चीजें छिपाना शुरु कर देते हैं। दोस्त प्यारा, अपने माँ बाप दुश्मन लगने लगते हैं। आज माँ बाप अपने बच्चों को डाँटते हैं तो बच्चे कहते है कि "पापा आप सठिया गए है।" आजकल के बच्चे ऐसा करते हैं तो कोई हैरानी की बात नहीं, सभी करते थे।

20-25 साल पहले हम भी करते थे। 25-30 साल इनके बच्चे भी ऐसा ही करेंगे। ये चक्र चलता रहेगा। आजकल के बच्चे अपने माँ बाप से नफरत करते है, बात नहीं मानते हैं लेकिन दूसरे की माता-पिता की बात खुशी - खुशी सुन लेते हैं। आजकल के माँ - बाप की सबसे बड़ी चिंता यह है कि गलत आदतों में न फँसे। कोई गलत रास्ता न चुन लें, क्योंकि कुछ रास्ते ऐसे हैं जिससे वापसी करीब-करीब न के बराबर है। जैसे- नशे का रास्ता, जहाँ एक बार इनसान चला जाये तो वापस नहीं लौटता है। आज का जो समय है - माँ बाप के अलावा विद्यालयों के शिक्षकों की भी जिम्मेदारी पहले से ज्यादा बढ़ गई है। मेरी तो सभी विद्यालय के शिक्षकों से उम्मीद और गुजारिश है कि वे बच्चों को एक अच्छा इनसान बना दे, क्योंकि शिक्षक आज जो पढ़ाने वाले है, उससे ज्यादा ज्ञान तो गूगल पर एक क्लिक पर उपलब्ध है। आज शिक्षक की जिम्मेदारी पहले से कही ज्यादा है, वो बच्चों को Moral Value सिखा दे, देश के लिए कुछ करने का जज्बा उनमें भर दें तो सोने पे सुहागा हो जाएगा। अगर माँ बाप के प्रति बच्चों में कृतज्ञता की भावना आ जाए तो वो कुछ ना कुछ जिन्दगी में कर ही लेंगे। शिक्षक ये सुनिश्चित करें कि बच्चे कुछ भी छुपाये नहीं और अपनी छोटी-बड़ी बातें अपनी शिक्षक और माता पिता को जरूर बताएं। बच्चों को शिक्षक समझाए कि अगर कोई समस्या है तो उसका समाधान भी है।

आज की पीढ़ी से मैं इतना ही निवेदन करना चाहता हूँ कि अपने माँ बाप की इज्जत करें। पिता की खुशी के लिए ही भगवान राम ने जीवन के चौदह वर्ष जंगल में खुशी-खुशी गुजार दिए । आपके माँ बाप को आपसे कुछ नहीं चाहिए । वो तो जाने के बाद अपनी सारी संपत्ति, धन - दौलत आपके लिए ही छोड़ के जायेगें । देश के हर युवा से कहना चाहता हूँ कि वे तीन चीजें रोज करना शुरु कर दे -

1) सबसे पहले कम से कम 30 मिनट अपने माता पिता के साथ गुजारें । इधर-उधर की कैसी भी बातें करें, खुद हँसें, उन्हें भी हँसाएं, कोई चुटकुला सुनायें, उनसे उनकी कोई पुरानी यादें ताजा करवायें। उनसे उनकी स्कूल, कॉलेज की बात कर उनसे उनकी किस्से पूछें, देखना जब वे अपनी स्कूल-कॉलेज की किस्से बतायेंगे ना, तो उस समय उनकी आँखों में एक चमक आने लगते हैं। जैसे-जैसे हम बडे हो रहे हैं , हमारे माँ बाप छोटे हो रहे हैं और ये समय फिर नहीं आयेगा। उनके जाने के बाद बड़ा अफसोस होता है। उनका कर्ज सारी जिंदगी नहीं उतर सकते हैं। अपना कुछ समय उनको देकर उस कर्ज का कुछ ब्याज जरूर भर सकते हैं।

2) दूसरी बात भूलकर भी अपने माँ पाप से ऊँची आवाज़ में बात नहीं करना चाहिए। उनको कभी भी ये मत महसूस नहीं होना चाहिए कि अब हम बूढ़े हो गए है, कमज़ोर हो गए हैं। इसलिए हमसे ऐसे बात की जा रही है।

3) तीसरी सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जब भी घर से हम बाहर निकले माँ बाप का पैर छूकर आशीर्वाद जरूर लेना चाहिए। माँ बाप का आशीर्वाद हमारे जीवन पर बहुत ही सकारात्मक प्रभाव डालता है और बड़ी से बड़ी मुसीबत भी टल जाते हैं।

माँ-बाप के बारें में जितना लिखा जाए, उतना ही कम है। अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि—

" माँ से बड़ा हमदर्द और
बाप से बड़ा हमसफर,
और कोई नहीं"।

****

खो गया बचपन

सुजीत कुमार सिंह

कार्यालय अधीक्षक, वरि. मंपप्र/का/सेलम

खो गया बचपन कहीं, ये मोबाइल के जमाने में,
खेला करते थे कभी, मिट्टी के मकानों में ।
कभी गिल्ली-डंडा, तो कभी छिपन छिपाई में,
आज तो खेल बस रह गया सिमट के मोबाइल में ।।

बचपन में त्योहार मनाते थे, मिठाई और पकवानों से,
आज त्योहार मनाते है, सेल्फी के दिवानों से ।
माँ की रोटी के आगे सब फीके थे पकवान,
आज मोबाइल के बिना फीके है हर पकवान ।।

नन्हें मुन्हें हाथों से, उड़ाते थे कागज के जहाज,
आज उन हाथों से चलाते है मोबाइल बिंदास ।
नींद आती थी हमें परियों की कहानी से,
आज नींद आती नहीं बिना मोबाइल के तरानों से ॥

पहले था कबड्डी, फुटबॉस और पतंगबाजी का दौर,
आज तो बस रह गया इंस्टाग्राम, रील्स और
डिजीटल गेम की ओर ।
न जाने किस मोड़ पर आ गई जीवन की ये दौर,
कि बिना मोबाइल नहीं है कुछ और कुछ और ।।"

****

राष्ट्र निर्माण में युवाओं का महत्व

धर्मवीर मीना
मुख्य नियंत्रक/सेलम

"कह उठी व्यग्र हिमालय नया सवेरा होने वाला है
देश के युवाओं की फौज खड़ी है, महाभारत होने वाला है!!

प्रस्तावना :-

वर्तमान युग में युवा राष्ट्र की एक शक्तिशाली सम्पति है। जिसमें प्रचुर मात्रा में ऊर्जा और उत्साह है। जो समग्र उन्नति के लिए आवश्यक माना जाता है। युवावस्था विकास की एक महत्वपूर्ण उम्र है, अनिश्चितता की अवधि जब सब कुछ उथल-पुथल में होता है। युवा कल की आशा है। वे देश के सबसे ऊर्जावान वर्ग होता है जो सही मानसिकता और क्षमता से देश के सर्वांगीन विकास में योगदान दे सकते हैं और उसे आगे बढ़ा सकते हैं।

आज की युवा पीढ़ी विभिन्न चीजों को पूरा करने की जल्दी में है और अंतिम परिणाम प्राप्त करने के लिए इतनी प्रेरित है कि वह अपने द्वारा चुने गए साधनों पर ध्यान नहीं देती है। जबकि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, गाणित वास्तुकला, इंजीनियरिंग और न जाने क्या-क्या क्षेत्र में कई प्रगति हुई है हम इस तथ्य से इनकार नहीं कर सकते कि समय के साथ अपराध दर में भी वृद्धि हुई है। आज दुनिया में पहले से कहीं अधिक हिंसा हो रही है और इसका बडा हिस्सा युवाओं को माना जाता है।

राष्ट्र निर्माण में युवाओं का महत्व: आज का युवा आने वाले भविष्य की भारत की नींव है। जितना हमारा युवा उत्साहित होते हैं, देश ऊर्जावान होता है। युवा देश का वो वर्ग होता है जो कौशल सीखने और गतिशील परिवेश के साथ तालमेल बिठाने में सक्षम होता है। इसलिए राष्ट्रीय निर्माण में युवाओं की केन्द्रीय भूमिका होती है।

राजनीति, अर्थव्यवस्था, प्रौद्योगिकी और चिकित्सा विज्ञान आदि का भविष्य युवाओं के हाथों में है। आज वर्तमान में अकाल, बेरोज़गार, जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण के कारण स्थिति अत्यधिक विकट रूप ले चुकी है जिसके समाधान युवा पीढ़ी के हाथ में है।

अन्य देशों के आंकडे बताते है कि बड़ी युवा आबादी वाले विकासशील देश अपनी अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण विकास देख सकते है यदि वे युवाओं के अधिकारों, शिक्षा व स्वास्थ्य पर अच्छा निवेश करते हैं क्योंकि आज का युवा ही कल का नेता, आविष्कारक, निर्माता और नव प्रवर्तक बनेगा।

विश्व में भारत में युवाओं की जनसंख्या सबसे अधिक हैं जिससे कि भारत को अन्य देशों पर बढ़त मिलती है। दुनिया में विकसित देशों में जहाँ वरिष्ठ नागरिकों की आबादी बढ़ रही है वही भारत में जनसंख्या का 60% युवा आज शिक्षित व प्रौद्योगिकी में समर्थ हो रहा है।

देश का युवा विकास के साथ-साथ महिला हिंसा और भ्रष्टाचार के खिलाफ कई प्रदर्शनों के माध्यम से हमने देखा है कि युवा कैसे सभी जातीय समूहों के लोगों को एक साथ ला सकते हैं।

" आप केवल एक बार युवा होते हैं और यदि आप इस समय का सही उपयोग करते हैं तो सब कुछ हासिल कर सकते हैं।"

- जे. ई. लुईस

यूथ इंडिया रिपोर्ट 2023 - 29 साल की औसत आयु के साथ भारत दुनिया की सबसे युवा आबादी में से एक है। परिवार कल्याण व स्वास्थ्य कल्याण मंत्रालय की रिर्पोट के अनुसार देश के आबादी में (15-29) वर्षों में युवाओं की हिस्सेदारी 28% है। अतः हमारे देश के युवा वर्गों को सशक्त करना अति आवश्यक है जिसके लिए युवाओं को सशक्तिकरण करना होगा अर्थात युवाओं को अपने जीवन पर नियंत्रण रखने और अपने भविष्य को आकार देने की आवश्यकता है। इसमें उनकी शिक्षा, संसाधनों की उपलब्धता और निर्णय लेने की शक्ति शामिल है।

" युवाओं के सशक्तिकरण से गरीबी में कमी, आर्थिक विकास में वृद्धि और एक मजबूत समाज बन सकता है। "

- जी. एम. ट्रेविलियन

युवा सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले कारक :-

⇒**शिक्षा -** युवाओं को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा जो उन्हें उचित निर्णय लेने तक पहुंच प्रदान करना और सक्रिय नागरिक बनने के लिए ज्ञान, कौशल, और उच्च गुणवत्ता की सोच प्रदान करती है।

⇒**कौशल विकास -** प्रशिक्षण और परामर्श कार्यक्रम की पेशकश जो युवाओं को कार्यबल में सफल होने और अपने समुदायों में पूरी तरह से भाग लेने के लिए आवश्यक तकनीकी और जीवन कौशल विकसित करने में मदद करती हैं।

⇒**उद्यमी और रोजगार -** युवाओं को अपना व्यवसाय शुरु करने के लिए प्रोत्साहित करना और समर्थन करना, उन्हें रोजगार के अवसरों और कैरियर विकास संसाधनों तक पहुँच प्रदान करना।

⇒**नागरिक सहभागिता -** युवाओं के नेतृत्व वाले संगठनों, युवा संसदों और समुदाय आधारित पहलों सहित निर्णय लेने की प्रक्रियाओं और सार्वजनिक चर्चा में भाग लेने के लिए युवाओं को अवसर प्रदान करना।

⇒**स्वास्थ्य/कल्याण -** शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल और सहायता सेवाओं जैसे संसाधनों तक पहुँच के माध्यम से युवाओं के बीच शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ाना।

⇒प्रौद्योगिकी व नवाचार - सामाजिक व आर्थिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए युवाओं को प्रौद्योगिकी और नवाचार के प्रति प्रोत्साहित करना चाहिए।

⇒कला और संस्कृति - युवाओं को रचनात्मक और सांस्कृतिक रूप से खुद को अभिव्यक्त करने और सांस्कृतिक गतिविधियों लेने के लिए सशक्त बनाना ।

युवा सशक्तिकरण से निम्न लाभ होते हैं—

i) अपराध दर में कमी - खराब शिक्षा, गरीबी व बेरोज़गारी युवाओं के अपराध और हिंसा में शामिल होने के प्रमुख कारण है। युवा सशक्तिकरण से अपराध दर में कमी आ सकती हैं। जिससे युवाओं में सकारात्मक जीवन विकल्प चुनने और समाज के उत्पादक और जिम्मेदार सदस्य बनने के अवसर, संसाधन प्रदान होते हैं।

ii) गरीबी उन्मूलन - युवाओं को सशक्त बनाने से कई तरह से गरीबी उन्मूलन में मदद मिल सकती है नौकरी प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करके युवा अच्छी तनख्वाह वाली नौकरियाँ प्राप्त करने और आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने के लिए आवश्यक कौशल व ज्ञान के माध्यम से जीवन स्तर सुधार सकते हैं।

iii) रोजगार सृजन - युवा अगर प्रोत्साहित व सशक्त होता है तो उसके उद्यमी बनने और व्यवसाय शुरु करने के लिए सशक्त होता है वह नवीन प्रौद्योगिकियों की शुरु वात और नए बाजारों के विकास को बढ़ावा देने के प्रति सोचता है। देश के लिए नए विकासात्मक कार्य करके देश की प्रगति में भागीदारी निभा सकते हें।

iv) बेहतर वैश्विक नागरिकता - वैश्विक चिंताओं को दूर करने और अधिक शांतिपूर्ण और टिकाउ दुनिया को बढ़ावा देने के लिए युवाओं को स्थान पहचान व उचित कार्यवाही करने का बढ़ावा मिलता है।

v) राजनीतिक कार्यों में वृद्धि - जब युवा सशक्त होते है तो वे राजनीतिक रूप से अधिक सक्रिय और संलग्न हो जाते है जिसमें अधिक जानकारी पूर्ण और भागीदारी पूर्ण बनता है।

vi) बेहतर आत्मविश्वास और आत्मसम्मान - सशक्त युवा बेहतर निर्णय लेते है और अधिक स्वतंत्रता रखते हैं । क्योंकि सशक्तिकरण से उनका आत्मविश्वास और आत्मसम्मान बढ़ता है।

राष्ट्रीय युवा सशक्तिकरण कार्यक्रम -

प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल ने 2017-18 से 2019-20 की अवधि के लिए राष्ट्रीय युवा सशक्तिकरण कार्यक्रम योजना। जिसके तहत 1160 करोड़ रुपए के बजट का प्रावधान किया गया।

राष्ट्रीय युवा सशक्तिकरण कार्यक्रम के अंतर्गत निम्नलिखित 8 उप-योजनाओं को शामिल किया गया है -

- नेहरू युवा केंद्र
- राष्ट्रीय युवा वाहिनि
- राष्ट्रीय किशोर विकास कार्यक्रम
- अंतर्राष्ट्रीय सहयोग
- युवा छात्रावास
- स्काउट और गाइड संगठनों को सहायता
- राष्ट्रीय अनुशासन योजना
- राष्ट्रीय युवा नेतृत्व कार्यक्रम

इसका लक्ष्य युवाओं की पूर्ण क्षमता हासिल करने के लिए उन्हें सशक्त बनाने और उनके जरिए देश को राष्ट्रों के बीच सही जगह हासिल करने में समर्थ बनाना है।

भारत के जनसाख्यिकीय लाभांश अर्थात् युवाओं से संबद्ध संभावनाएँ - देश की जनसंख्या का 65% से अधिक आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है। भारत में वर्ष 2030 तक लगभग 200 मिलियन की वृद्धि होने की क्षमता है।

ग्लोबल एंटरप्रेन्योरशिप मॉनिटर 2023 के अनुसार भारत में एक सुदृढ़ स्टार्टअप पारितंत्र मौजूद है, जिसमें 70000 से अधिक स्टार्टअप मान्यता प्राप्त है। स्टार्टअप इंडिया जैसी सरकारी पहलों ने वर्ष 2016 में इसके शुभारंभ के बाद से 80000 से अधिक स्टार्टअप के सृजन को समर्थन दिया है, जिससे युवाओं में नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा मिला है।

डिजिटल अर्थव्यवस्था - भारत में IT और डिजिटल सेवा क्षेत्र सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 8% का योगदान देते है 4.5 मिलियन से अधिक युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराते हैं।

इंटरनेट का प्रसार - भारत में 800 मिलियन से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं। जो विशाल डिजिटल टैक-सेवी युवाओं के लिए रोजगार प्रदान करवाते हैं।

वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता - विश्व आर्थिक मंच (W E F) के वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता सूचकांक (GCI) 2023 में भारत 63 देशों की सूची में 43वें स्थान पर रहा जो कि युवाओं में बढ़ते कौशल व क्षमताओं की वृद्धि को दर्शाता है।

आज के युवाओं की मुख्य समस्याएँ -

अवसाद- इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर बहुत अधिक समय मिलने से युवा लोग अपने साथियों से तथा खेल कूद से वंचित हो जाते है तथा अवसाद से ग्रस्त हो जाते हैं जिससे वे अपने सामाजिक व नैतिक दायित्वों से दूर हो जाते हैं। यौन गतिविधि 2019 यूथ रिस्क बिहेवियर सर्विलांस सिस्टम में हाई स्कूल के 35% छात्रों में सेक्स करना पाया गया।

नशा - भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों में नशे की लत देखी गयी।

सोशल मीडिया - फेसबुक, इंस्टाग्राम और ट्विटर एक दूसरे से जुड़ने के बेहतरीन तरीके हो सकते हैं जिससे युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव पडता है और युवाओं के डेट करने के तरीकों से उनका मानसिक स्वास्थ्य पर खराब प्रभाव पडता है।

उपसंहार - जोश और ऊर्जा से भरे किसी बड़े सपने को संजोने के लिए युवावस्था स्वर्णिम काल है। यह दौर रोमांच से भरा भी है। फिर भी उन्हें खुली आँखों से देखना होगा। यही समय है जब हम समाज के आर्थिक विकास के लिए अपने विचारों को मूर्त रूप दे सकते हैं। साथ ही युवा अवस्था में ही हम मंजिल की ओर बढ़ते समय व्यावसायिक जागरूकता ला सकते हैं।

भारतीय युवा भारत के साथ-साथ कुछ हद तक पूरे विश्व की उन्नति की कुंजी रखते हैं। यदि युवाओं को प्रभावी नेता, आविष्कारक और नव प्रवर्तक बनना है तो उत्कृष्ट शिक्षा, प्रशिक्षण, स्वास्थ्य व मार्ग दर्शन की आवश्यकता है। जिससे देश की अर्थव्यवस्था और प्रगति दिन दुगुनी व रात चौगुनी वृद्धि करेगा।

" युवाओं में वह शक्ति है जो इस दुनिया को बदल सकती है यदि वे सही दिशा में अपने प्रयासों को केंद्रित करते हैं तो वे अकल्पनीय परिवर्तन ला सकते हैं।"

- महात्मा गाँधी जी

****

राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए गठित की गई समितियां

- केंद्रीय हिंदी समिति
- हिंदी सलाहकार समिति
- राजभाषा कार्यान्वयन समिति (राभाकास)

पिता का प्यार

आर. उषा,
मंरेप्र के निजी सचिव

पिता वो साया ठंडा सा, जो धूप में भी राहत दे,
अपने सपने भूलकर, बस बच्चों की हिफाजत करे।

खुद तपकर जो राह बनाए, काँटों को भी फूल करें,
मेहनत की मिट्टी से, वो सोने सी तकदीर गढ़े।

कभी सख़्त, तो कभी नरम, पर दिल में प्यार समाया है,
हर मुश्किल से लड़ जाए, बस बच्चों का संग निभाया है।

हाथ पकड़ जो चलना सिखाए, गिरने पर सहारा दे,
अपने हिस्से की खुशियाँ देकर, हौसले का सितारा दे।

बचपन में जो कंधे पर बिठाकर, दुनिया घुमाने ले जाता था,
खुद भूखा रहकर भी, हमें प्यार से खिलाता था।

ख्वाहिशें हमारी पूरी करने, खुद को भूला जो बैठा है,
अपने सपनों को ताक पर रख, बस हमारा रखवाला है।

उसकी हर चुप्पी में प्यार छुपा, उसकी हर डांट में दुआ,
पिता का प्यार अनमोल सा है, जो हर ग़म को मिटा।

वो न होता तो क्या होता, ये जीवन अधूरा सा होता,
पिता है तो जीवन संपूर्ण है, उसका प्यार अनमोल होता!

****

मोबाइल और सोशल मीडिया से मित्रता और संबंधों में दूरी

इमरान खान

हेड कांस्टेबल/रेसुब/का/सेलम

आज के समय में तकनीकी विकास ने हमारे जीवन के कई पहलुओं को प्रभावित किया है, और इनमें से सबसे बड़ा प्रभाव हमारे व्यक्तिगत संबंधों और मित्रताओं पर पड़ा है। मोबाइल फोन और सोशल मीडिया ने जहां एक ओर दुनिया को संचार के दृष्टिकोण से सुलभ बना दिया है, वहीं दूसरी ओर इसके उपयोग से व्यक्तिगत संबंधों में दूरी और विकृति भी आई है। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, और व्हाट्सएप, इन सभी ने हमारी सामाजिक दुनिया को एक नया रूप दिया है। अब हम किसी भी समय, कहीं भी, अपने दोस्तों, परिवार और जान-पहचान वालों से जुड़ सकते हैं। हालांकि, यह तकनीकी क्रांति हमारे रिश्तों को एक नए दृष्टिकोण से देखने का कारण बन चुकी है।

दूरी के कारण:

बातचीत की कमी: मोबाइल और सोशल मीडिया पर बातचीत करने से असली बातचीत में कमी आती है। एक-दूसरे के साथ मिलने या बातचीत करने का अनुभव अलग होता है।

सामाजिक तुलना: सोशल मीडिया पर लोग अपनी जिंदगी के सबसे अच्छे पल साझा करते हैं, जिससे अन्य लोग खुद की जिंदगी की तुलना करने लगते हैं। इससे ईर्ष्या और असंतोष पैदा हो सकता है।

ध्यान भंग: जब हम दोस्तों या परिवार के साथ होते हैं, तो मोबाइल पर ध्यान देने से हम उनके साथ पूरी तरह से उपस्थित नहीं रहते। इससे संबंध कमजोर होते हैं।

अन्य लोगों के प्रभाव: सोशल मीडिया पर नए मित्र और संपर्क बनाना कभी-कभी असली दोस्तों को नजरअंदाज करने का कारण बन सकता है। इससे पुराने रिश्ते फीके पड़ जाते हैं।

जल्दबाजी में संवाद: टेक्स्ट या संदेश के माध्यम से बातचीत करते समय भावनाएं पूरी तरह से व्यक्त हो पातीं, जिससे गलतफहमियां पैदा हो सकती हैं।

दूरियों को कैसे कम करें:

ऑफलाइन समय बिताएं: दोस्तों और परिवार के साथ नियमित रूप से ऑफलाइन समय बिताएं। मिलकर खाना बनाना, खेलना या किसी अन्य गतिविधि में भाग लेना फायदेमंद हो सकता है।

सामाजिक मीडिया की सीमाएं: सोशल मीडिया का उपयोग सीमित करें। रोजाना केवल कुछ समय निर्धारित करें और उसके बाद उसे बंद कर दें।

ईमानदारी से संवाद: अगर आपको लगता है कि सोशल मीडिया के कारण आपके रिश्ते प्रभावित हो रहे हैं, तो अपने दोस्तों और परिवार से ईमानदारी से बात करें।

वास्तविक बातचीत: जब भी संभव हो, टेक्स्ट या कॉल की बजाय आमने-सामने की बातचीत करें। इससे भावनाओं को बेहतर तरीके से समझा जा सकेगा।
सकारात्मक सामग्री साझा करें: सोशल मीडिया पर सकारात्मक फैलाएं। ऐसे पोस्ट साझा करें जो आपके रिश्तों को मजबूत बनाएं।

निष्कर्ष:

मोबाइल और सोशल मीडिया ने हमारे रिश्तों में कई तरह के बदलाव लाए हैं। जहां एक ओर ये तकनीकी साधन हमें दूर बैठे अपने प्रियजनों से जोड़ने में मदद करते हैं, वहीं दूसरी ओर ये हमारे वास्तविक रिश्तों में दूरी और नफरत पैदा करने का कारण भी बन सकते हैं। संवाद की कमी, मानसिक दबाव, दिखावा और असली भावनाओं को छिपाना, ये सब कारण हैं जिनसे सोशल मीडिया और मोबाइल के अत्यधिक उपयोग से मित्रता और रिश्तों में दूरी उत्पन्न होती है।

समाज में यह महत्वपूर्ण है कि हम इस डिजिटल युग में अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को समझें और वास्तविक जीवन में अपने संबंधों पर ध्यान केंद्रित करें। हमें अपने रिश्तों में सच्चाई, ईमानदारी और भावनात्मक जुड़ाव बनाए रखने की आवश्यकता है, ताकि मोबाइल और सोशल मीडिया के बावजूद, हम अपने असली रिश्तों में गहरी समझ और प्यार का अनुभव कर सकें।

इसलिए, हमें तकनीकी उपकरणों के उपयोग को नियंत्रित करना चाहिए और वास्तविक जीवन के संबंधों को प्राथमिकता देनी चाहिए। केवल इस तरह ही हम अपने संबंधों को मजबूत और स्वस्थ बना सकते हैं।

****

जीवन का संतुलन

श्रीवासवी ज्ञानसुंदर

निजी सचिव ।।, वरि.मंइंजी/का/सेलम

मुंबई के चहल-पहल भरे शहर में, जहाँ गगनचुंबी इमारतें बादलों को चूमती थी और भीड़-भाड़ वाली गलियों में स्ट्रीट फुड की खुशबू फैलती थी, रोहन नाम का एक युवा पेशेवर रहता था। वह आपनी कॉपोरेट नौकरी में एक उभरता हुआ सितारा था, जो अपनी लगन और कड़ी मेहनत के लिए जाना जाता था। हर दिन, वह सुबह जल्दी उठता, जिम जाता और फिर दफ़्तर भागता, जहाँ वह अपने कंप्यूटर स्क्रीन पर चिपके हुए लंबे समय तक बिताता, अक्सर ज़रूरी मीटिंग के लिए लंच ब्रेक का त्याग करता।

जैसे-जैसे हफ्ते महीनों में बदलते गए, रोहन की जीवनशैली ने उसके स्वास्थ्य पर बुरा असर डाला। उसकी सुबह की कसरत छिटपुट हो गई और वह अक्सर अपनी ऊर्जा के स्तर को बनाए रखने के लिए खुद को अस्वास्थ्यकर स्नैक्स खाते हुए पाता। डेडलाइन के तनाव ने उसे कैफीन पर निर्भर कर दिया, और जल्द ही, उसे बार-बार सिरदर्द और थकान का अनुभव होने लगा। अपने बिगड़ते स्वास्थ्य के बावजूद, रोहन ने इन लक्षणों को अनदेखा कर दिया, और उन्हें अपनी नौकरी की मांगों के लिए जिम्मेदार ठहराया।

एक शाम घर लौटते समय, रोहन को सीने में तेज़ दर्द महसूस हुआ। वह घबरा गया और लड़खड़ाते हुए पास की बेंच पर जा गिरा । पास में बैठे बुजुर्ग ने रोहन की परेशानी देखी और उसके पास गया । "तुम अस्वस्थ लग रहे हो, नौजवान। क्या तुम अपना ख्याल रख रहे हो ?" उसने पूछा, उसके चेहरे पर चिंता साफ झलक रही थी।

रोहन ने आह भरी, "मैं बस काम में व्यस्त हूँ। मैं ठीक हो जाऊंगा।"

बुजुर्ग ने अपना सिर हिलाया । "तुम मुझे बचपन की याद दिलाते हो। मैं भी काम में डूबा रहता था, अपने स्वास्थ की उपेक्षा करता रहता था, जब तक कि मैं लगभग सब कुछ खो नहीं देता था। हमारा शरीर मशीन की तरह है; उन्हें उचित देखभाल और रखरखाव की जरूरत होती है। इसके बिना, वे टूट जाते हैं"।

उस शब्दों ने रोहन के दिल को छू लिया। उसे एहसास हुआ कि वह न केवल अपने शारीरिक स्वास्थ की उपेक्षा कर रहा था, बल्कि अपने मानसिक स्वास्थ्य की भी उपेक्षा कर रहा था। उस व्यक्ति ने आगे कहा," तुम अपने लक्ष्य हासिल कर सकते हो, लेकिन अपने स्वास्थ्य की कीमत पर नहीं। आत्म- देखभाल को प्राथमिकता दो। संतुलित आहार पर निवेश करो, नियमित रूप से व्यायाम करो और ब्रेक लो। तुम्हारा स्वास्थ्य ही तुम्हारी सबसे बड़ी संपत्ति हैं।"

अजनबी की समझदारी से प्रेरित होकर, रोहन ने बदलाव करने का फैसला किया। अगले दिन उसने घर पर ही स्वस्थ भोजन बनाना शुरू कर दिया, अपने आहार में फल और सब्जियाँ शामिल की। उसने एक ऐसी दिनचर्या बनाई जिसमें तनाव से राहत के लिए नियमित कसरत और ध्यान शामिल था। धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से, वह अधिक ऊर्जावान और केंद्रित महसूस करने लगा।

महीनों बाद, रोहन ने पाया कि वह न केवल काम में सफल हो रहा है, बल्कि एक संतुष्ट निजी जीवन का भी आनंद ले रहा है। उसने दोस्तों और परिवार के लिए समय निकाला, और यहाँ तक कि एक स्थानीय स्वास्थ्य शिविर में स्वयंसेवा भी की, और दूसरों के साथ एक स्वस्थ जीवन शैली के महत्व को साझा किया।

जिस तेज-तर्रार दुनिया में हम रहते हैं, उसमें अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना बहुत ज़रूरी है। एक संतुलित जीवन न केवल हमारी भलाई को बढ़ाता है, बल्कि हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने की हमारी क्षमता को भी बढ़ाता है।

याद रखें, स्वास्थ्य ही धन है, इसकी उपेक्षा करने से हम सब कुछ खो सकते है।

****

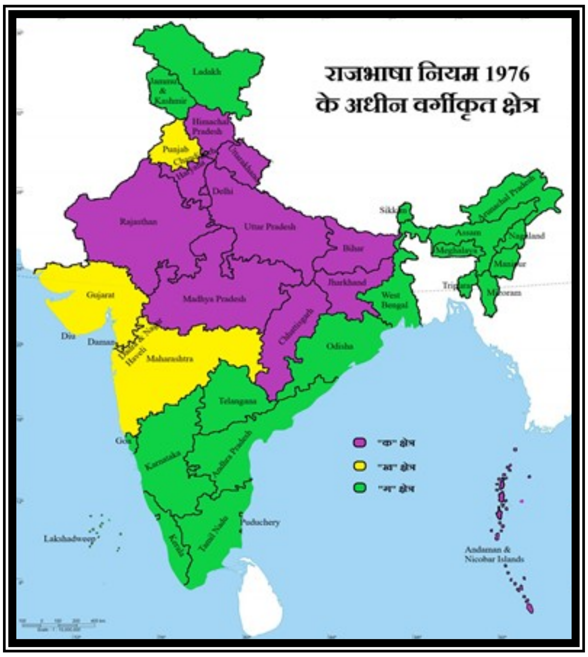

राजभाषा नियम के अनुसार वर्गीकृत भारतीय राज्यों के 3 क्षेत्र

- ‘क’ क्षेत्र
- ‘ख’ क्षेत्र
- ‘ग’ क्षेत्र

सपनों की उडान

संतोष कुमार
कनि.लिपिक/वरि.मंसाप्र/का/सेलम

चाँदनी रात में, तारे चमकते हैं,
सपनों की दुनिया में हम खो जाते
हर ख्वाब में बसी, एक नई कहानी,
दिल की धड़कन में बसी है रवानी।

फुलों की खुशबू, ये हवा में बहे
सपनों की उड़ान, हमें ले चले।
हर मोड पर मिले, नए रंगीन नजारे
जीवन की राह में, छुपे हैं अनगिनत सारे।

सपनों की चादर, बुनते हैं हम
हर मुश्किल में, मिलते हैं हम ।
साथ चले जब, तो हर दर्द मिटे,
सपनों की इस दुनिया में, हम सब खिलते ।

आओ मिलकर, एक नई कहानी लिखें,
सपनों की इस उडान में, हम सब झिलमिलाएँ।
हर दिन नया हो, दर रात सुहानी,
सपनों की इस दुनिया में बसी है हमारी जिंदगानी।
****

<u>सीखने की भूख</u>

वीरेंद्र कुमार

सहायक/मंरेप्र/का/सेलम

" कुछ सीखने की भूख ही आपको आपकी मंजिल तक पहूँचाएगी"

मैं आज बहुत खुश हूँ। क्योंकि आज मेरी पहली सैलरी आयी है। अपने छोटे से शहर से, मैं यहाँ अपनी पढाई पूरी करने आया था। पापा तो चाहते थे कि मैं अपनी पढाई पर ही ध्यान दूँ। लेकिन मैंने घर की हालत देखी है। पढाई के साथ मैने नौकरी भी की। घर का लोन भी है और पढाई पूरी करने के बाद भी तो यही करना है। फिर मैंने पार्ट टाइम एक जाँब ज्वाइन कर लिया। जिसमें मुझे 12 हजार रुपये मिल रहे थे। पहले महिने की सैलेरी लिए रक्षाबंधन मनाने मैं अपने घर के लिए रवाना हुआ। घर जाने में मुझे 6 घंटे लगते हैं। ट्रेन का सफर रहता है। सैलेरी के पैसे मैंने अपने पर्स में रखे थे। त्योहार का समय है। ट्रेन में जगह मिलना मुश्किल की बात है। लेकिन इन सब बातों को अब मैं मुसीबत नहीं मान रहा था। बल्कि इन सब के बाबजूद मेरा मन खुश था । जेब में पैसे जो थे । पैसा पास में हो तो खुशी होती ही है। इसी बात का मुझे आज अहसास हो गया था । ट्रेन का पूरा डब्बा लोगों से भरा था। मेरा स्टॉप लास्ट स्टॉप था। कई स्टेशन पर रुकती ट्रैन मजे से चल रही थी। प्लेटफार्म पर उतर कर मैं भी मजे लेते कुछ खाते पीते हुए अपनी यात्रा कर रहा था।

थोडी देर बाद ट्रेन में कुछ जगह हुई और एक सीट मुझे बैठने को मिल गई। खिड़की के पास की सीट थी। तो बाहर की ठंडी, गरम हवा में, मेरी आँख कब लग गई मुझे पता नहीं चला। करीब 2 घंटे बाद शोर के कारण मेरी आँख खुल गई । अभी मैने समय देखा तो मेरा स्टेशन करीब 1 घंटा दूर ओर होगा। प्यास लगी मैंने पानी की बोतल लेने के लिए अपने पेंट की पीछे वाली जेब में हाथ डालकर पर्स निकालना चाहा। मेरी तो जैसे जान ही निकल गई। मेरा पर्स मेरी पॉकेट में नही था। मैं एकदम से खडा हो गया और नीचे उपर अपनी सारी पॉकेट को चेक करने लगा । सीट के नीचे, बेग में हर जगह देखा। लेकिन मेरा पर्स की नहीं था। आस पडोस में खडे और बैठे सब को भी पता चल गया था की मेरी पर्स खो गया। मैने सबसे पूछा भी लेकिन सभी का जबाव ना था। सोने के पहले जिस प्लेटफार्म पर भी ट्रेन रुकी भी लगभग हर प्लेटफार्म पर मैं ट्रेन के नीचे उतरा था।

कुछ ना कुछ लेने। वहाँ किसी ने मेरा पर्स चोरी कर दिया, कोई ट्रेन में भीड़ का फायदा उठा कर पर्स चोरी करके ले गया मुझे कोई अंदाजा नहीं। कुछ घंटों पहले मैं खुश था, अब वो सारी खुशी मेरी चली गई। पर्स में पैसों के साथ मेरी कुछ आई डी कार्ड भी थी। जिसके जाने का मुझे बहुत दुख था। मेरी पहली कमाई जिससे मेरा त्यौहार अच्छा होता । सभी के लिए मैंने उन पैसों से कुछ ना कुछ लेने का सोच रखा था। मेरे लिए वो पैसा बहुत थे। बस मैं सर पकड़ कर बैठा रहा । मेरा स्टॉप सबसे लास्ट था। और वो भी आ गया था।

ट्रेन से सब उतरने लगे थे मैं बस वहीं अपनी सीट पर बैठा रहा। सबको जाते हुए.... उतरते हुए देख रहा था। मैं इतना लापरवाह कैसे हो सकता हूँ। यह मैं सोच रहा था। आखिर मैंने अपने पर्स का ध्यान क्यों नहीं रखा। यही सब सोच सोच कर मैं अपने आप को बार-बार कोस रहा था। ट्रेन खाली होने के थोड़ी देर बाद तक मैं वहीं बैठा रहा फिर आखिरकार अपने आप को संभाला। मैं अपनी सीट से उठा और दरवाज़े की ओर जाने लगा ।

आँखें मेरी अब भी यहाँ-वहाँ मेरे पर्स को ही खोज रही थी। सोच रहा था कि क्या पता यहीं कहीं पड़ा होगा मेरा पर्स इसलिए में सब सीट के नीचे एक बार फिर देखते हुए जा रहा था। मेरी नजर एक पॉलीथीन पर पड़ी जो सीट के नीचे थी। उसको उठाकर मैंने खोलकर देखा। उसमें एक हैंड वेग निकला । वजन से थोड़ा भारी था। खोलकर मैंने जल्दी से देखा। मेरी आँखें चमक उठी, उसमें पैसा था। मैंने फटाफट उस बैग को वापस बंद किया और उस बैग को मैंने अपने बड़े बैग में डाल दिया मैंने उसे ठीक से देखा भी नहीं कि कितने पैसे उसमें हैं। मैंने सिर्फ यही सोचा की जल्दी से यहाँ से निकलूँ । क्या पता जिसका बैग गुम गया कहीं वो वापस ना आ जाए। मैंने मन में यही सोचा की शायद यह मेरे लिए ही है। भगवान चाहता है कि यह मुझे मिले। इसमें इतना पैसा है कि मेरी और मेरे घरवालों की कुछ समस्या तो हल हो सकती है। अब मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा । मैं अब पहले से भी ज्यादा खुश था बस में जल्दी से प्लेटफार्म से निकला और ऑटो कर के अपने घर आया । घर आकर पहले में सबसे मिला फिर कुछ समय सबके साथ बात की। फिर अकेले में जाकर मैंने अपना बैग खोला और उसमें से वो बैग निकाला। मैंने उसमें रखे पैसे निकाले करीब 2 लाख रुपये उस बैग में थे उसके अलावा एक पर्स खोल कर देखना चाहा, लेकिन इतने में ही कोई बाहर से आवाज लगाने लगा जिसके कारण मैंने फिर उसे बंद कर दिया। रक्षाबंधन पर मैंने अपनी बहनों को अच्छे से गिफ्ट दिया। साथ ही मैंने यह भी सोच लिया था कि उन पैसे से क्या करने वाला हूँ। इस बारे में मैंने घर पर कुछ नहीं कहा, सिर्फ मन ही मन मैंने प्लान बना लिया था। पापा के एक लोन की किश्तें बाकी थी मैंने उसमें से उन्हें बिना बताए 30 हजार रुपये किश्त भर दी । बाकी के पैसों को भी मैंने ऐसे ही इस्तेमाल करने बाला था। मैं बस 3 दिनों की छुट्टी पर आया था। वापस जॉब पर और पढ़ाई के लिए लौटने का समय हो गया था।

मैं वापस ट्रेन में बैठ गया। इस बार मेरे बैग के साथ उसमें वो छोटा बैग भी था जिसमें करीब 1 लाख 60 हजार रुपये थे। एक बार मेरे पर्स चोरी होने के बाद अब मैं ज्यादा सतर्क हो गया हूँ। मुझे नहीं लगता कि अब मैं ऐसी गलती दोबारा करूँगा। मैंने अपना हाथ बैग से हटाया ही नहीं, प्लेटफार्म पर नीचे उतरते समय भी मैं बैग को अपने साथ लेकर गया। करीब आधा सफर हो गया था । एक प्लेटफार्म पर गड़ी रुकी। मैंने एक लड़के को जो चाय बेच रहा था, बुलाया और बोला की चाय दे। लड़के ने मुझे चाय भरकर दी और जैसे ही उसने मेरी तरफ देखा, वो बिना पैसे

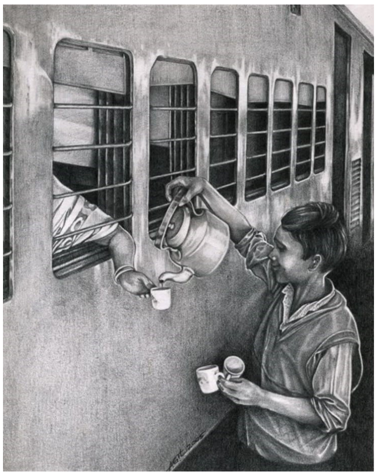

लिए बिना कुछ बोले भागा। मैंने उसे आवाज लगाई कि भाई छोटू कहाँ जा रहा है। अपने पैसे तो लेकर जा। पर वो भागा ही जा रहा था । कुछ मिनट बाद दिखाई देना बंद हो गया शायद प्लेटफार्म के बाहर किसी दुकान में गया था। ट्रेन का समय हुआ, हॉर्न बजा । धीरे- धीरे गाड़ी प्लेटफार्म से निकलने लगी तभी वो लड़का फिर से दौड़ता हुआ मेरी खिड़की पर आया। बोला भाई अपना पर्स लो। उसने मेरे हाथ में मेरा पर्स दिया। वो वहीं रुक गया और ट्रेन ने धीरे - धीरे स्पीड पकड़ ली। उसके चेहरे पर तब मुस्कान और संतोष था। वो मेरे कलेजे पर चला।

मैंने अपना पर्स देखा, सब वैसा ही था। उतने ही रुपये थे। एक भी कम नहीं हुआ था। उस लड़के से कुछ पूछने का या कहने का समय ही नहीं मिला । उसका हालत भले ही तंग हो । लेकिन उसको और उसके परिवार को नींद अच्छी आती होगी। अब मैं यह सोच रहा था कि भगवान अब मुझे क्या दिखाना और सिखाना चाहता है। मैंने एक बैग लिया और उसके पैसे अपने समझे। जबकि एक लड़का मुझसे काफी छोटा, मुझे जिन्दगी की बड़ी सीख दे गया। मुझे यह सिखा गया कि मैं बेईमान हूँ। यह सारा पैसा बेईमानी का है। भले ही यह पैसे मैंने चुराया नहीं लेकिन मैंने यह जानने की कोशिश भी नहीं की कि यह पैसा किसका है। एक लड़का मुझे बेईमान से ईमानदार बना गया। मैंने अपने कमरे में जाकर सबसे पहले उस बैग में देखा कि कहीं कुछ पता एड्रेस मिल जाए ।

उसमें एक पर्स था जिसमें एक एड्रेस मुझे मिला। जैसे उस पते पर उस बैग को भेज दिया साथ ही एक चिट्ठी भी लगी जिसमें मैंने लिखा कि इसमें जितने पैसे कम है मैं अपनी सैलरी से वापस कर दूंगा। इस नोट के साथ मैंने अपना नंबर भी छोड़ा। मुझे नहीं पता था कि उनके लिए पैसे के लिए वो मुझे माफ करेंगे या नहीं। लेकिन अब मैं हर बात के लिए तैयार था। मुझमें न जाने कैसे इतनी हिम्मत आ गई। कुछ दिनों में ही उनका फोन आया । बुजुर्ग थे, उन्होंने कहा कि उनके हाथ से यह पैसा ना जाने कहा रह गया था।

किसने कब लिए उन्हें भी पता नहीं चला। उन्होंने मुझे बहुत दुआ और आर्शीवाद दिया। उन्होंने कहा कि बचे पैसे वापस नहीं दूँ तो भी चलेगा। लेकिन मुझे वो वापस देना है पैसा और बैग मिलने की खुशी इस शान्ति के आगे कुछ भी नहीं थी। यह कुछ अलग ही थी। उस लड़के ने मेरी ज़िन्दगी बदल दी। भगवान मुझे यह सीख देना चाहता था।

****

हिंदी प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ, हिंदी टंकण तथा आशुलिपि परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने पर देय नकद पुरस्कार

(1) प्रबोध -

1.	70 प्रतिशत या इससे अधिक अधिक अंक प्राप्त करने पर	रु.1600/-
2.	60 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 70 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	रु.800/-
3.	55 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	रु.400/-

(2) प्रवीण -

1.	70 प्रतिशत या इससे अधिक अधिक अंक प्राप्त करने पर	रु.1800/-
2.	60 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 70 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	रु.1200/-
3.	55 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	रु.600/-

(3) प्राज्ञ -

1.	70 प्रतिशत या इससे अधिक अधिक अंक प्राप्त करने पर	रु.2400/-
2.	60 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 70 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	रु.1600/-
3.	55 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	रु.800/-

(4) हिंदी टंकण -

1.	97 प्रतिशत या इससे अधिक अधिक अंक प्राप्त करने पर	रु.2400/-
2.	95 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 97 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	रु.1600/-
3.	90 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 95 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	रु.800/-

(5) हिंदी आशुलिपि -

1.	95 प्रतिशत या इससे अधिक अधिक अंक प्राप्त करने पर	रु.2400/-
2.	92 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 95 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	रु.1600/-
3.	88 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 92 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	रु.800/-

निजी प्रयत्नों से परीक्षाएं पास करने पर एकमुश्त पुरस्कार:-

प्रबोध	प्रवीण	प्राज्ञ
1600/-	1500/-	2400/-

हिन्दी टंकण	आशुलिपि
1600/-	3000/-

नारी शक्ति

श्रीवासवी ज्ञानसुंदर
निजी सचिव ।।, वरि.मंइंजी/का/सेलम

देश के दिल में एक आग जलती है,
सशक्त महिलाएं, नई ऊँचाइयाँ छू रहीं हैं।
सितारों की तरह सपनों के साथ
वे चमकते और चमकाते है,
संस्कृति की टेपेस्ट्री में, उनके धागे
आपस में जुड़ते हैं।

खेतों से लेकर बोर्ड रूम तक
गुंजती हैं उनकी आवाजें,
सन्नाटे को तोड़ते हुए, वे दृढ़ धरातल पर खड़े हैं।

माताएं और योद्धा, अनुग्रह के निर्माता
वे हर प्रयास में अपना स्थान ढूंढ लेते हैं।

साहस और बुद्धि के साथ,
वे आदर्श को चुनौती देते है।

विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए,
वे उठते हैं और रूपांतरित होते हैं।

महिलाओं का जश्न मनाना,
जीवन का सार है।
शक्ति की भावना से वे संघर्ष पर
विजय प्राप्त करते है।
****

नराकास/सेलम — संयुक्त राजभाषा पखवाड़े का आयोजन

****

पुरस्कार वितरण

साहित्यकार जयंती

पोत्तनूर जं.

कोयंबुत्तूर स्टेशन

मंडल कार्यालय

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

राजभाषा उत्सव — हिंदी प्रतियोगिता

पुरस्कार वितरण

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सेलम की ओर से राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य-निष्पादन के लिए मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, सेलम को राजभाषा उत्कृष्ट पुरस्कार प्राप्त हुआ।

सितंबर तिमाही में राजभाषा श्रेष्ठ कार्य-निष्पादन के लिए सेलम मंडल के चिकित्सा शाखा को मंडल रेल प्रबंधक/सेलम द्वारा राजभाषा चल शील्ड प्राप्त हुआ।

स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

ईरोड जंक्शन

कोयंबुत्तूर

डीज़ल शेड, ईरोड

पोत्तनूर

उदगमंडलम

मेट्टुपालैयम

सेलम जंक्शन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति—हिंदी कार्यशाला

हिंदी कार्यशाला

हिंदी कक्षाएँ

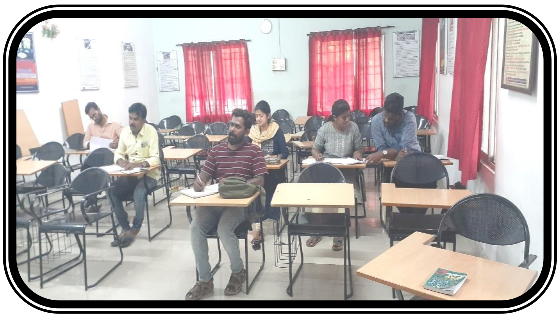

हिंदी प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ परीक्षाओं का आयोजन

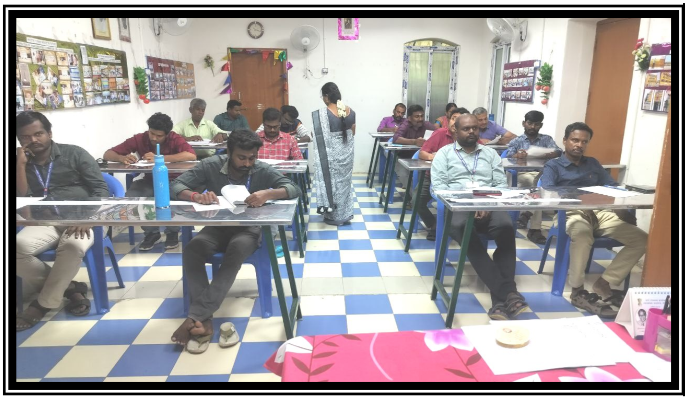

प्रवीण लिखित एवं मौखिक परीक्षा - दि.09.11.2024

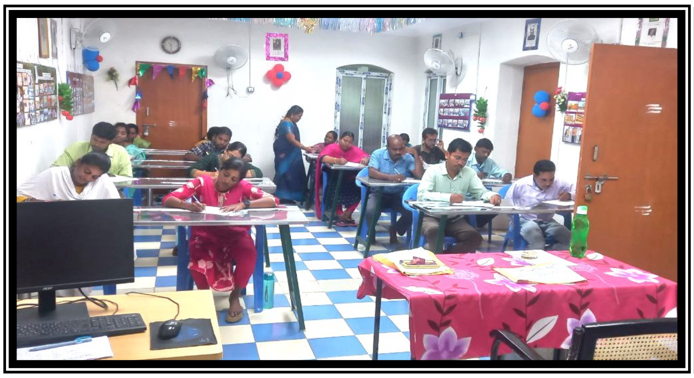

प्राज्ञ लिखित एवं मौखिक परीक्षा - दि.16.11.2024

प्रबोध लिखित एवं मौखिक परीक्षा - दि.17.11.2024 मंडल कार्यालय

स्टेशन हिंदी प्रतियोगिताएं

कोयंबुत्तूर स्टेशन

तिरुप्पत्तूर स्टेशन

आत्तूर स्टेशन

सेलम जं.